## प्राक्कथन

प्रस्तुत प्रबन्ध का विषय कवीन्द्र परमानन्द विरचित "शिवभारत का आलोचनात्मक अध्ययन" है । यह एक ऐतिहासिक महाकाव्य है । संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक महाकाव्यों की परम्परा बहुत सम्पन्न नहीं है । काव्य में ऐतिहासिकता का समन्वय सर्वप्रथम बाणभट्ट द्वारा रचित "हर्षचरित" नामक आख्यायिका में प्राप्त होता है । वाक्पतिराज का "गउडवहो" तथा पद्मगुप्त का "नवसाहसाङ्कचरित" ऐतिहासिक महाकाव्यों के निदर्शन है । इनके अतिरिक्त संस्कृत के काव्यों में बिल्हण का "विक्रमाङ्कदेवचरित" तथा कल्हण की "राजतरङ्गिणी" जैसे महाकाव्य हैं, जिनमें ऐतिहासिक सामग्री पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है ; किन्तु इस दिशा में जैन कवियों का योगदान भी स्तुत्य है । अमरचन्द्र, बालचन्द्र, उदयप्रभ, माणिक्यचन्द्र, नयचन्द्रसूरि इत्यादि कवियों के काव्य ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध संस्कृत की ऐतिहासिक महाकाव्य विधा में योगदान आकलन करने का प्रयास है । कवीन्द्र परमानन्द विरचित "शिवभारत" पूर्ववर्ती ऐतिहासिक महाकाव्यों की तुलना में अर्वाचीन होने के कारण पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री से युक्त है । यह ग्रन्थ लगभग पचास वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था फिर भी इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की ओर जितना ध्यान देना आवश्यक था, विद्वानों ने उतना ध्यान नहीं दिया । निष्पक्ष दृष्टि से इसका अध्ययन न करके केवल शिवाजी के महत्त्व को बढ़ाने के लिए ही इसका उपयोग किया गया । इसी बात को दृष्टि में रखते हुए अपने शोध कार्य के लिए मैंने इस ग्रन्थ को चुना । सौभाग्यवश

मराठी , संस्कृत तथा इतिहास के श्रेष्ठ विद्वान प्रो० चिन्तामणि त्र्यम्बक केंधे मुझे मार्गदर्शन के लिए मिले । एम० फिल० की उपाधि के लिए "शिवभारत में चित्रित समाज" का समालोचन किया गया था तथा अब पी०एच०डी० की उपाधि के लिए "शिवभारत का आलोचनात्मक अध्ययन" इस शोध प्रबन्ध में किया गया है । आलोचना में ऐतिहासिकता की अपेक्षा महाकाव्यत्व का ही विवेचन अधिक किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है । प्रथम अध्याय में काव्य -प्रणेता कवीन्द्र परमानन्द के स्थितिकाल, बहुज्ञता, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में "शिवभारत" का महाकाव्यत्व तथा ऐतिहासिक दृष्टि से शिवभारत के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय में साहित्यिक समालोचन के अन्तर्गत शिवभारत के भाव पक्ष तथा कला पक्ष पर विचार किया गया है ।

पंचम अध्याय में शिवभारत में शिवाजी के अतिरिक्त जो अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों का वर्णन आया है, उनका चित्रण किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में लोकचित्रण पर प्रकाश डाला गया है तथा सप्तम अध्याय उपसंहार है ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मुझे जिन - जिन व्यक्तियों ने सहयोग दिया उनके प्रति मैं अत्यन्त आभारी हूँ । सर्वप्रथम भण्डारकर इन्स्टीट्यूट, पूना के ग्रन्थ संग्रहालय के अध्यक्ष तथा विशेष रूप से आर०एन० दाण्डेकर,

जो कि भण्डारकर इन्स्टीट्यूट के मानद सचिव हैं, के प्रति विशेष कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मेरे इस शोध - कार्य के लिए आवश्यक पुस्तकें दीं । साथ ही बम्बई विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के अध्यक्ष के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा आवश्यक कर्त्तव्य है, जिनके द्वारा मुझे शोध विषय से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी प्राप्त हुई ।

नागपुर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रो० श्रीधर भास्कर वर्णेकर के प्रति मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस शोध - कार्य को पूर्ण करने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया ।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मौलाना आजाद लाइब्रेरी के सैयद राकिम अली तथा श्री मसीउल्ला खाँ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग से पुस्तकें सुगमता से प्राप्त होती रही हैं ।

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध के लिए मैं गुरुवर प्रो० चि० त्र्यं० केंधे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिनके वात्सल्यपूर्ण तथा योग्यनिर्देशन में यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ है । साथ ही गुरु पत्नी श्रीमति सुलभा केंधे की हृदय से आभारी हूँ जिनके वात्सल्य तथा प्रोत्साहन से इस शोध -कार्य को पूर्ण किया है ।

मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । विशेष रूप से अपने पिता मौ० शफी खाँ तथा पति डॉ० सलीम अख्तर के सहयोग को विस्मृत नहीं कर सकती । इनके सहयोग के बिना मेरा यह शोध - कार्य प्रायः असम्भव ही था । अन्त में अपने

विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने समय - समय पर मुझे परामर्श देकर कृतार्थ किया ।

विद्वज्जन शुभाकांक्षिणी

रिज़वाना परवीन

रिज़वाना परवीन